विज्ञप्ति

एक प्रति - 10 रु.
एक वर्ष - 300 रु.
पन्द्रह वर्ष - 3100 रु.

तेरापंथ की केन्द्रीय गतिविधियों का सर्वाधिक लोकप्रिय साप्ताहिक मुखपत्र

विज्ञप्ति (साप्ताहिक) : वर्ष 25 : अंक 24 : नई दिल्ली : 6-12 सितम्बर 2019

परम पावन महातपस्वी शांतिदूत अहिंसा यात्रा प्रणेता आचार्यश्री महाश्रमणजी आदि ठाणा-१७७ बेंगलुरु में सानंद चातुर्मासिक प्रवास कर रहे हैं। आचार्यप्रवर की मंगलसन्निधि में पर्युषण पर्वाधिराज, संवत्सरी महापर्व के सभी कार्यक्रम तथा क्षमापना समारोह अत्यधिक आध्यात्मिक उल्लास के साथ समायोजित हुए। न केवल बेंगलुरु के अपितु कर्नाटक के अन्य क्षेत्रों व तमिलनाडु के विभिन्न क्षेत्रों के हजारों श्रद्धालु इस महान पर्व से लाभान्वित हुए। देश के विभिन्न प्रान्तों से समागत सेवार्थियों ने भी इसका भरपूर लाभ उठाया। तपस्याओं का दौर अब भी जारी है। १६ सितम्बर से आचार्यप्रवर की मंगलसन्निधि में आठ दिवसीय प्रेक्षाध्यान शिविर तथा १ अक्टूबर से आठ दिवसीय राष्ट्रीय संस्कार निर्माण शिविर आयोजित होंगे। इसके अतिरिक्त अनेकानेक अधिवेशन, सम्मेलन आदि भी आगामी दिनों में समायोज्य हैं।

परम श्रद्धेय आचार्यश्री महाश्रमण बेंगलुरु में

विश्व हिन्दू परिषद् की मार्गदर्शक तेरापंथ की आचार्यत्रयी

२२ अगस्त। आज के मुख्य प्रवचन कार्यक्रम में विश्व हिन्दू परिषद के मार्गदर्शक एवं संरक्षक श्री दिनेशचंद्रजी तथा केन्द्रीय मार्गदर्शक श्री रागवलुजी विशेष रूप से उपस्थित थे।

परमाराध्य आचार्यप्रवर ने संबोधि ग्रन्थाधारित अपने पावन प्रवचन में धर्म और अधर्म की विवेचना करते हुए धर्माचरण से आत्मा को विशुद्ध बनाने की प्रेरणा प्रदान की।

अहिंसा यात्रा प्रणेता आचार्यप्रवर ने प्रसंगवश कहा--'आज श्री दिनेशचंद्रजी का समागमन हुआ है। कभी-कभी मिलना हो जाता है। भारत राष्ट्र स्वस्थ रहे, अच्छा रहे, इस दृष्टि से भारत की जनता में नैतिकता और अहिंसा का प्रभाव बना रहे। आदमी जितना असंयम को छोड सके, छोड़ने का प्रयास करे। वह नशे से मुक्त रहे। हम अभी अहिंसा यात्रा कर रहे हैं। इस यात्रा में मुख्य रूप से तीन बातों का प्रचार किया जा रहा है--सद्भावना, नैतिकता और नशामुक्ति। दिनेशचंद्रजी खूब अच्छा कार्य करते रहें, देश की आध्यात्मिक सेवा करते रहें।'

विश्व हिन्दू परिषद के मार्गदर्शक, संरक्षक एवं पूर्व अध्यक्ष श्री दिनेशचंद्रजी ने कहा--'परम वंदनीय, परम पूज्य आचार्यश्री महाश्रमणजी के चरणों में साष्टांग प्रणाम करते हुए यह कहना चाहूंगा कि आपके दर्शन होना मेरा सौभाग्य है। विश्व हिन्दू परिषद् की स्थापना से पूर्व बाबा साहब आप्टेजी ने आचार्य तुलसी के दर्शन कर इसके स्थापना कार्यक्रम में पधारने का अनुरोध किया था, किन्तु वे उस कार्यक्रम में नहीं पधार सके। उस समय उनका जो पत्र प्राप्त हुआ, उसने विश्व हिन्दू परिषद् के चिन्तकों के मार्गदर्शन का कार्य किया। मुझे आचार्य महाप्रज्ञजी के भी दर्शनों का सौभाग्य मिला। राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के सरसंघचालक श्रीसुदर्शनजी मुझे हरियाणा में उनके पास लेकर गये थे। उस समय मुझे आनन्द की अनुभूति हुई तो बाद में स्वयं जाता-आता रहा। कठिन समय में भी उन्होंने मेरा मार्गदर्शन किया और उस मार्गदर्शन का परिणाम मुझे सफलता के रूप में प्राप्त हुआ।

वर्तमान में विश्व हिन्दू परिषद् को आचार्यश्री महाश्रमणजी का आशीर्वाद और मार्गदर्शन प्राप्त हैं। हमारा

सौभाग्य है कि हमें आचार्यश्री के दर्शन करने और आपसे कुछ ज्ञान श्रवण करने का सुअवसर मिलता रहता है। आपके प्रवचन और मार्गदर्शन से हमें एक दिशा मिलती है, दृष्टि मिलती है। मुझे जब भी अवसर मिलता है, मैं आपके दर्शन हेतु पहुंच जाता हूं और आप जो आदेश-निर्देश, पथदर्शन मुझे देते हैं, मैं उस अनुसार कार्य करने का पूरा प्रयास करता हूं।'

अहिंसा यात्रा प्रवक्ता मुनि कुमारश्रमणजी ने अपनी भावाभिव्यक्ति दी। चतुर्मास प्रवास व्यवस्था समिति-बेंगलुरु के अध्यक्ष श्री मूलचंद नाहर ने अतिथियों के स्वागत में अपनी अभिव्यक्ति दी। साध्वी सुषमाकुमारीजी ने तपस्या के संदर्भ में अपने विचार व्यक्त किए। कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया।

महत्त्वपूर्णा संस्कृतभाषा

२३ अगस्त। परम पूज्य आचार्यप्रवर ने मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के दौरान सम्बोधि ग्रंथाधारित अपने मंगल प्रवचन में धर्म के महत्त्व को विवेचित करते हुए उसे आत्मसात् करने, अधर्म से बचने तथा भावशुद्धि रखने की प्रेरणा प्रदान की। आचार्यप्रवर ने अपने प्रवचन के पश्चात् अपनी कृति 'महात्मा महाप्रज्ञ' के वाचनक्रम को आगे बढाया।

संस्कृत भारती के अखिल भारतीय संगठन मंत्री श्री दिनेश कामत ने संस्कृत भाषा के विषय में अपनी अभिव्यक्ति दी।

पूज्यप्रवर ने इस संदर्भ में संस्कृत भाषा में कहा--'भारत देशे नैकाः भाषाः प्रचलन्ति । स्थानीयाः भाषाः अपि सन्ति। आंग्लभाषाऽपि चलति। भाषायाः महत्त्वमपि वरीवर्ति। किञ्च भाषा माध्यमं चकास्ति। ज्ञानस्य माध्यमं भाषा भवति। अनेके ग्रन्थाः संस्कृतभाषायां प्रणीताः सन्ति। अस्माकं जैनशासने जैनागमानां वृत्तयः (टीकाः) संस्कृतभाषायां उपलभ्यन्ते। एवमेव च अन्येऽपि अनेके ग्रन्थाः यथा--आचार्यउमास्वातिप्रणीतं तत्त्वार्थाधिगमसूत्रम्, तदुपरि स्वोपज्ञं भाष्यं उमास्वातिवर्यस्य, भाष्योपरि च भाष्यानुसारिणी वृत्तिः सिद्धसेनगणिना रचिता सापि संस्कृतभाषायां समस्ति। जैन धर्मस्य अनेके-अनेके ग्रन्थाः संस्कृतभाषायां विलसन्तितमाम्। ततश्च श्रीमद्भगवद्गीता संस्कृतभाषायां वरिवर्ति। भगवद्गीतायां कियन्तः श्लोकाः प्रेरणादायकाः सन्ति। (पूज्यप्रवर ने श्रीमद्भगवद्गीता के कई श्लोक धाराप्रवाह रूप में उच्चरित किए। एक जैनाचार्य के मुख से भगवद्गीता के श्लोकों को सुनकर उपस्थित श्रोता आश्चर्यचकित और मंत्रमुग्ध-से बने हुए थे)

आचार्यमहाप्रज्ञवर्यैः संबोधिग्रन्थः रचितः। यथा भगवद्गीतायां संवादशैली चकास्ति तथास्मिन् संबोधिग्रन्थेऽपि संवादशैली विलसति। मुनि मेघस्य भगवतो महावीरस्य च संवादः समस्ति ग्रन्थेस्मिन्। संवाद माध्यमेन परम पूज्याचार्य महाप्रज्ञवर्येण सिद्धान्तानां, जीवनोपयोगि तथ्यानां च निर्देशः कृतः, इति प्रायः अनुमीयते। एवमेव गुरुवर्याः तुलसीगणिवर्याः अपि संस्कृतभाषायाः विद्वान्सः आसन्। अनैके साधवः साध्व्यश्चापि संस्कृतज्ञाः सन्ति अस्माकं धर्मसंघे।

संस्कृतभाषाअपि महत्त्वपूर्णा वरिवर्ति। अन्याः भाषाः सन्ति। भवद्भिः संस्कृतभारती माध्यमेन कार्यं क्रियते। संस्कृतभाषाज्ञानं स्यात्, तदा जैनागमानाम् अध्ययनं सुकरं भवेत्। एवं संस्कृतभाषाऽपि महत्त्वपूर्णा वरिवर्ति।'

कवि श्री सुखदेव सिंह ने काव्य पाठ के द्वारा आचार्यप्रवर की अभ्यर्थना की।

कार्यक्रम के दौरान श्रीमती मनोहरबाई बाफना ने ४१ दिन की तपस्या का प्रत्याख्यान किया।

२४ अगस्त। मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के दौरान परमाराध्य आचार्यप्रवर का आचार्य महाप्रज्ञ विरचित 'सम्बोधि' ग्रन्थ पर आधारित मंगलप्रवचन हुआ। तत्पश्चात् आचार्यप्रवर ने 'महात्मा महाप्रज्ञ' के वाचनक्रम को आगे बढ़ाया।

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् के तत्वावधान में संचालित आचार्य तुलसी डायग्नोस्टिक सेन्टर की रिव्यु कमेटी की बैठक के संदर्भ में अ.भा.ते.यु.प. के अध्यक्ष श्री विमल कटारिया ने अपनी भावाभिव्यक्ति दी।

पूज्य प्रवर ने प्रसंगवश कहा--'आज कल युवक परिषद् डायग्नोस्टिक सेन्टर का भी संचालन करती है और सामायिक भी कराती है। ऐकान्तिक बात नहीं है कि तेयुप एक ही दिशा में कार्य करती है। यह बहुत अच्छी बात है कि युवकों, किशोरों में तपस्या, सामायिक आदि का क्रम चलता है। पहले कहते थे कि युवकों में धर्म की इतनी रुचि नहीं है, किन्तु आज कल तो किशोर वर्षीतप, मासखमण आदि भी कर लेते हैं। यह बहुत अच्छी बात है।'

साध्वी विशालप्रभाजी द्वारा जीवन के उन्नीसवें वर्ष में 41 की तपस्या

परम पूज्य आचार्यप्रवर की मंगल सन्निधि में आज साध्वी विशालप्रभाजी (बरपेटा रोड) ने ४१ की तपस्या परिसम्पन्न की। ज्ञातव्य है कि ०२ मार्च २००१ को जन्मी साध्वी विशालप्रभाजी ने सन् २०१५ में १५ दिन, सन् २०१७ में ३१ दिन तथा सन् २०१८ में ३६ दिन की तपस्या सम्पन्न की थी। संभवतः तेरापंथ धर्मसंघ के अब तक के इतिहास का यह पहला प्रसंग है जब किसी चारित्रात्मा ने इतनी कम उम्र में ४१ दिन की तपस्या की है। पूज्यप्रवर से सन् २०१३ में बीदासर में समायोजित कीर्तिमानी दीक्षा समारोह में गृहस्थ वेष में अपनी मां के साथ साध्वी दीक्षा ग्रहण करने वाली साध्वी विशालप्रभाजी की संसारपक्षीया मां साध्वी पुलकितप्रभाजी, संसारपक्षीया बहन साध्वी हिमांशुप्रभाजी, संसारपक्षीय भाई मुनि विवेककुमारजी, संसारपक्षीय मामा मुनि मननकुमारजी, मुनि नयकुमारजी (कजिन मामा) और संसारपक्षीया मौसी समणी नीतिप्रज्ञाजी भी धर्मसंघ में साधनारत हैं।

गत वर्ष जब साध्वी विशालप्रभाजी तपस्या कर रही थीं, तब उन्होंने अपनी भावना व्यक्त की थी कि पूज्यप्रवर जितने दिन की तपस्या करने का फरमाएंगे, उतने दिन तपस्या करने का भाव है। आचार्यप्रवर ने उनकी तपस्या के संदर्भ में अपनी इच्छा एक डायरी में लिखकर रख दी, किन्तु पूछने पर भी उसे व्यक्त नहीं किया। आखिर साध्वीजी ने ३६ दिनों की तपस्या का पारणा कर लिया, लेकिन उनके मन में यही भावना थी कि आचार्यप्रवर ने जितने दिन लिखे थे, उतनी तपस्या मुझे करनी है। इस वर्ष उन्होंने तपस्या प्रारंभ की, तब से भी उनका यही भाव था कि मैं आचार्यप्रवर द्वारा निर्धारित लक्ष्य को प्राप्त करूं। आचार्यप्रवर से इस विषय में कई बार पूछा गया, किन्तु आचार्यप्रवर ने अपनी इच्छा को व्यक्त नहीं किया। आखिर साध्वीजी ने ४१ दिन की तपस्या करने का लक्ष्य बनाया। उसके बाद आचार्यप्रवर से पूछा कि अब तो आपश्री की इच्छा फरमा दें। आचार्यप्रवर ने २४ अगस्त २०१८ को अपनी डायरी में लिखित अपनी इच्छा को पढकर सुनाया, जो इस प्रकार थी--'साध्वी विशालप्रभा को ४१ दिन का तप कराने का लक्ष्य है,पर यथापेक्षा कभी भी पारणा कराया जा सकता है।'

आचार्यप्रवर की यह मंगल आशंसा व्यक्त होने से पूर्व ही साध्वीजी का लक्ष्य बन चुकी थी, यह देखकर उपस्थित जन चकित थे। साध्वीप्रमुखाजी ने कहा--'आचार्यप्रवर की भावना का स्वतः संप्रेषण हो गया। आचार्यप्रवर ऐसा आशीर्वाद दिराएं कि ये (साध्वी विशालप्रभाजी) इस लक्ष्य का वरण कर सकें।'

आज सूर्योदय के उपरान्त साध्वीप्रमुखाजी आदि साध्वियां पूज्यसन्निधि में उपस्थित हुईं। उस समय साध्वी विशालप्रभाजी के तप की अनुमोदना का उपक्रम भी रहा। इस अवसर पर साध्वी सुमतिप्रभाजी, मुनि मननकुमारजी और मुनि नयकुमारजी ने अपनी भावाभिव्यक्ति दी। साध्वीवृंद और समणीवृंद ने पृथक्-पृथक् अनुमोदना गीत प्रस्तुत किए।

परमाराध्य आचार्यप्रवर ने नमस्कार महामंत्र, मंगलपाठ, लोगस्स आदि का उच्चारण कर साध्वी विशालप्रभाजी को पारणे के लिए ग्रास (भोज्य सामग्री) बक्साया। आचार्यप्रवर ने इस अवसर पर तपस्विनी साध्वीजी को अपना एक लिखित संदेश भी प्रदान किया। उससे पूर्व आचार्यप्रवर ने उसका वाचन भी किया। पूज्यप्रवर द्वारा प्रदत्त संदेश इस प्रकार है--

अर्हम्

२४.०८.२०१९

भाद्रव कृष्णा अष्टमी, वि.सं. २०७६

तपस्विनी साध्वी विशालप्रभा!

जीवन के उन्नीसवें वर्ष में इकतालीस दिनों का तिविहार तप कर तुमने एक विशेष उल्लेखनीय अनुष्ठान सम्पन्न किया है। इससे पहले भी तुमने ३६ व ३१ दिनों का तिविहार तप सम्पन्न किया है।

गुरुकुलवास में रहते हुए ऐसी तपस्याओं की आराधना कर तुम तप के नभ में एक देदीप्यमान नक्षत्र के रूप में आभाषित हो रही हो। खूब विकास करो।

आचार्य तुलसी महाप्रज्ञ चेतना सेवा केन्द्र, बेंगलुरु **आचार्य महाश्रमण**

महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाजी द्वारा साध्वी विशालप्रभाजी के लिए रचित दो पद्य इस प्रकार हैं--

छोटी वय में बड़ी तपस्या सौ-सौ साधुवाद झेलो।
कर आगम-स्वाध्याय निरंतर लाभ अनुत्तर तुम ले लो।।
मासखमण तप हुआ तीसरा वर्धमान उत्साह रहा।
एक-एक से बढ़कर तीनों गुरु-करुणा का स्रोत बहा।।

इकतालीस दिनों के तप का गुरुवर ने आलेख लिखा।
पावस से पहले ही तप की हुई प्रज्वलित दीपशिखा।।
भैक्षव शासन नन्दनवन की हंसती खिलती कुसुमकली।
अनायास मन में संजोई तपस्विनी की चाह फली।।

बेंगलुरु **साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा**

२४/०८/२०१९

२५ अगस्त। परमाराध्य आचार्यप्रवर ने मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के दौरान आचार्य महाप्रज्ञ विरचित 'सम्बोधि' ग्रन्थाधारित अपने पावन प्रवचन में द्रव्य, क्षेत्र, काल, व्यवस्था, बुद्धि और पौरुष को कर्मोदय का निमित्त बताया । पूज्यप्रवर ने सम्बोधि ग्रन्थाधारित प्रवचन के पश्चात् 'महात्मा महाप्रज्ञ' का वाचन करते हुए आचार्य महाप्रज्ञ के बचपन के प्रसंग सुनाए। आचार्यप्रवर ने पर्युषण पर्वाराधना के विषय में अवगति एवं प्रेरणा भी प्रदान की।

पूज्यप्रवर के प्रवचन से पूर्व महाश्रमणी साध्वी प्रमुखाजी का उद्बोधन हुआ। साध्वीवर्याजी ने उपस्थित जनमेदिनी को उत्प्रेरित किया।

पूज्यप्रवर से श्रीमती कुसुमलता हिरण ने ३१ तथा श्रीमती उषा तातेड़ ने ३० दिन की तपस्या का प्रत्याख्यान किया। श्री राकेश माण्डोत ने अपनी नवीन सीडी 'ऊँ अर्हम्' पूज्यप्रवर के समक्ष लोकार्पित करते हुए गीत का संगान किया।

लुंचन एक प्राचीन परंपरा

26 अगस्त। आज परमपूज्य आचार्यप्रवर के मस्तक और मुखारविन्द का लुंचन हुआ। मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के दौरान चतुर्विध धर्मसंघ ने पूज्यप्रवर को सविधि वन्दन कर लुंचन की सुखपृच्छा करते हुए लुंचन की निर्जरा में सहभागी बनाने की प्रार्थना की। आचार्यप्रवर ने इस संदर्भ में कहा--'लुंचन जैन शासन में साधु संस्था से जुड़ा हुआ एक उपक्रम है। ऐसा प्रतीत होता है कि यह एक प्राचीन परम्परा है। वर्तमान में हमारे यहां यह व्यवस्था है कि सामान्यतया आषाढी अमावस्या के बाद संवत्सरी से पहले-पहले लुंचन (केशापनयन) हो जाना चाहिए। मेरे मुंह और मस्तिक का लुंचन आज हुआ है। इसके संदर्भ में जो निर्जरा की संभागिता की बात प्रस्तुत की गई है, उस विषय में यह प्रेरणा दी जा रही है कि चारित्रात्माएं लुंचन के उपलक्ष्य में एक-एक घंटा आगम स्वाध्याय करें और श्रावक-श्राविकाएं अतिरिक्त रूप में सात-सात सामायिक करने का प्रयास करें।'

परम पूज्य आचार्यप्रवर ने संबोधि ग्रन्थाधारित अपने पावन प्रवचन में धनार्जन में प्रामाणिकता रखने की प्रेरणा प्रदान की। पूज्यप्रवर ने प्रसंगवश कहा--'मांस और शराब बेचना जैन श्रावक के लिए अच्छी बात नहीं होती। व्यवसाय तो और भी बहुत हैं, मांस शराब का व्यवसाय जैन श्रावक क्यों करें।' पूज्यप्रवर ने अपने प्रवचन के पश्चात् अपनी कृति 'महात्मा महाप्रज्ञ' के वाचनक्रम को आगे बढ़ाया।

नवी मुम्बई से समागत पूर्व सांसद श्री संजीव नाइक ने पूज्यप्रवर की अभिवंदना में अपनी अभिव्यक्ति देते हुए कहा--'गत कई वर्षों से आचार्यश्री महाश्रमणजी देश के विभिन्न प्रांतों में मानवता का संदेश लेकर यात्रायित हैं। इससे केवल तेरापंथ समाज ही नहीं, जैनेतर समाज भी लाभान्वित हो रहा है। आप की प्रेरणा से लोगों को शक्ति प्राप्त होती है, दृढता प्राप्त होती है और जीवन में अच्छे विचारों के साथ आगे बढने की प्रेरणा भी मिलती है। आपके दर्शन कर मैं अपने आप को सौभाग्यशाली मानता हूं। आपने जब से मुम्बई में चातुर्मास करने की घोषणा की है, तब से मुम्बईवासियों का उत्साह और भी बढ़ गया। आपका यह चतुर्मास विश्व को नई दिशा देने वाला होगा। हमारे नाईक परिवार का तेरापंथ धर्मसंघ से गहरा नाता जुड़ा हुआ है। यह नाता और भी दृढ होता जाए, आपसे यही आशीर्वाद चाहता हूं।'

इस अवसर पर आचार्यप्रवर ने कहा--'संजीवजी नाइक का संपर्क कई वर्षों से है। परम पूज्य आचार्य महाप्रज्ञजी मुम्बई पधारे थे। अब हमने भी मुम्बई में जाना और वहां चातुर्मास करना निर्णीत कर दिया है। राजनीति सेवा का एक माध्यम है। इस सेवा में शुद्धता बनी रहे तो यह निर्मल रह सकती है। खूब अच्छा कार्य चलता रहे।'

आज मुख्य प्रवचन कार्यक्रम से पूर्व अभातेयुप के तत्त्वावधान में अभिनव सामायिक का उपक्रम रहा। इस उपक्रम का संचालन मुनि योगेशकुमारजी ने किया। इस संदर्भ में राजाजीनगर तेयुप के अध्यक्ष श्री गुलाब बांठिया ने पूज्यप्रवर के समक्ष अपनी भावाभिव्यक्ति दी।

पूज्यप्रवर ने इस अवसर पर कहा--'अभिनव सामायिक तेरापंथ युवक परिषद् का अच्छा कार्यक्रम है। ऐसा लगता है कि इसके लिए तैयारी की जाती है, श्रम किया जाता है। पर्युषण के पूर्व दिन में यह प्रयोग हुआ है। सामायिक के प्रति अच्छा रुझान बना रहे।'

आध्यात्मिक उल्लासमय वातावरण में पर्युषण पर्वाधिराज का शुभारंभ

27 अगस्त। भाद्रपद कृष्णा द्वादशी। जैन शासन के पर्युषण पर्वाधिराज का शुभारंभ। आध्यात्मिक उल्लास का वातावरण। मुख्य प्रवचन कार्यक्रम का प्रारंभ परमाराध्य आचार्यप्रवर के मंगल महामंत्रोच्चार से हुआ।

मुख्य नियोजिका जी ने 'पर्युषण का महत्त्व' विषय को विवेचित किया। साध्वी ज्योतिप्रज्ञाजी ने आज के निर्धारित विषय 'खाद्य संयम दिवस' के संदर्भ में गीत को प्रस्तुति दी।

महाश्रमणी साध्वी प्रमुखाजी ने अपने उद्‌बोधन में कहा--'पर्युषण पर्व आत्मा तक पहुंचने की यात्रा है। आत्मा तक पहुंचने के लिए शरीर पर भी ध्यान देना अपेक्षित होता है। पूर्व कर्मों का क्षय करने के लिए शरीर को धारण करना चाहिए। आत्मयुक्त शरीर की अनिवार्य आवश्यकताओं में एक है--भोजन। भोजन में विवेक रखना जरूरी है। भोजन का उद्‌देश्य स्वास्थ्य है तो साधना भी है। इसलिए भोजन में विवेक का होना आवश्यक है। विवेक के बिना भोजन स्वास्थ्य और साधना दोनों दृष्टियों से नुकसानदेह हो सकता है। भोजन हित, मित और ऋत होना चाहिए। निर्जरा के बारह भेदों में प्रथम चार भोजन से संबंधित हैं। उनके द्वारा भी खाद्य संयम कर आत्मोन्नति की दिशा में आगे बढा जा सकता है।'

आज तेरापंथ धर्मसंघ के चतुर्थ अनुशास्ता श्रीमज्जयाचार्य का महाप्रयाण दिवस का भी प्रसंग था। इस संदर्भ में मुख्यमुनिश्री ने गीत का संगान किया। साध्वीवर्याजी ने श्रीमज्जयाचार्य के व्यक्तित्व एवं कर्तृत्व पर प्रकाश डाला।

परम पूज्य आचार्यप्रवर ने अपने पावन प्रवचन में कहा--'पर्युषण महापर्व का आज प्रारंभ हुआ है। पर्युषण एक सुन्दर समय है। मुझे नहीं पता कि किस महापुरुष ने इस सप्तदिवसीय पर्युषण की परिकल्पना की और कैसे यह शुरू हुआ, किन्तु जिसने और जब भी इसे शुरू किया, यह समारम्भ अपने आप में बहुत महत्त्वपूर्ण है। संवत्सरी तो मुख्य दिन है ही, उससे पूर्व के ये सात दिन उसकी भूमिका बनाने वाले हैं। जैन श्वेताम्बर परंपरा में पर्युषण और दिगम्बर परंपरा में दस लक्षण पर्व की बात है। दोनों परस्पर मानों जुडे हुए हैं। पर्युषण के अंतिम दिन अर्थात संवत्सरी अथवा उसके अगले दिन से संभवतः दस लक्षण पर्व प्रारंभ हो जाता है। पर्युषण के सात दिन अध्यात्म साधना के लिए निर्धारित दिन हैं। संवत्सरी तो मानों उत्कृष्ट साधना का दिन है। पर्युषण और संवत्सरी पर श्रावक समाज को भी अच्छा आध्यात्मिक अवसर मिल जाता है। श्रावक समाज में भी पर्युषण के प्रति बहुत अच्छी चेतना है। पर्युषण के दिनों में अनेक उपक्रम चलते है। मुख्य प्रवचन कार्यक्रम इन उपक्रमों में मुख्य समय होता है। यह समय और ज्यादा महत्त्वपूण समय है।'

भगवान महावीर की अध्यात्म यात्रा पर प्रवचनमाला मंगल आरंभ

आचार्यप्रवर ने 'भगवान महावीर की अध्यात्म यात्रा' के वर्णन क्रम का प्रारंभ करते हुए कहा--'भगवान महावीर की अध्यात्म यात्रा एक सुन्दर विषय है। पर्युषण और संवत्सरी के अवसर पर कुछ विस्तार के साथ इस विषय की अभिव्यक्ति का प्रयास किया जाता है। भगवान महावीर की अध्यात्म की यात्रा को समझने के लिए आत्मवाद को जानना भी अपेक्षित होता है।

हमारी दुनिया में दो ही तत्त्व हैं--जीव और अजीव। इन दो के सिवाय हमारी दुनिया में और हमारी दुनिया कुछ भी नहीं है। आत्मा हमेशा से है और उसका कभी विनाश भी नहीं होता अर्थात् उसका शाश्वत अस्तित्व है। उसमें पर्याय परिवर्तन होता रहता है।

आत्मवाद, कर्मवाद, पुनर्जन्मवाद, लोकवाद, क्रियावाद आदि जैन दर्शन के महत्त्वपूर्ण सिद्धांत हैं। इनमें जैन दर्शन काफी या पूर्णतया समाविष्ट है। परम पूज्य आचार्य महाप्रज्ञजी के समय यह चर्चा चली थी कि आत्मवाद, लोकवाद आदि सिद्धांतों पर पृथक्-पृथक् ग्रन्थ तैयार हों। आचार्यश्री के पुनीत सान्निध्य में हम लोग आसीन होते थे और आगम के पारायण आदि का कार्य चलता था। उस समय अलग-अलग चारित्रात्मा को अलग-अलग ग्रन्थ तैयार करने का दायित्व सौंपा भी गया था। उनमें से आत्मवाद का ग्रन्थ 'आयावाओ' तो तैयार हो गया। उसमें मुख्यनियोजिकाजी का योगदान है, औरों का भी योगदान हो सकता है। वह ग्रन्थ अपने

आप में महत्त्वपूर्ण है। अन्य ग्रन्थ भी कभी तैयार हो जाएंगे तो वे भी महत्त्वपूर्ण हो सकें, ऐसी कामना की जा सकती है।

आत्मवाद के बिना पुनर्जन्मवाद का क्या महत्त्व हो सकता है। पुनर्जन्मवाद तो मानों आत्मवाद और कर्मवाद पर आधारित है। भगवान महावीर की अध्यात्म यात्रा भी आत्मवाद, पुनर्जन्मवाद, कर्मवाद आदि से संदृब्ध है। ऐसे सिद्धांतों के आलोक में भगवान महावीर की अध्यात्म यात्रा को विवेचित किया जा सकता है।

भगवान महावीर इस भरत क्षेत्र की वर्तमान अवसर्पिणी में जैन शासन के चौबीसवें तीर्थंकर हुए हैं। हम उनके शासन में अभी साधना कर रहे हैं। भगवान महावीर परम पुरुष थे, लोकोत्तम पुरुष थे, परम पुनीत आत्मा वाले पुरुष थे। धार्मिक क्षेत्र के महान नेताओं में एक नाम भगवान महावीर का है। भगवान महावीर की आत्मा के अंतिम भव की पृष्ठभूमि में उनके पूर्वजन्मों का भी योगदान था। उनके पिछले जन्मों को जानने से कर्मवाद के विषय में कुछ जानकारी हो सकती है। मानों उससे कर्मवाद की निष्पक्षता उजागर होती है कि तीर्थंकर बनने वाली आत्मा को भी अपने पापकर्म भोगने होते हैं।

भगवान महावीर की आत्मा के अनन्त-अनन्त भव हुए हैं। किन्तु इतना जान पाना और बोल पाना वर्तमान में हमारे लिए संभव नहीं। स्वयं केवलज्ञानी भी किसी आत्मा के अनन्त-अनन्त जन्मों का पृथक्-पृथक् वर्णन नहीं कर सकते। हम लोग भगवान महावीर की अध्यात्म यात्रा के अन्तर्गत उनके सत्ताईस भवों का वर्णन करते हैं।'

धर्मसंघ के विशिष्ट आचार्य थे श्रीमज्जयाचार्य

पूज्यप्रवर ने जयाचार्य महाप्रयाण दिवस के संदभ में कहा--'आज भाद्रव शुक्ला द्वादशी है। श्रीमज्जयाचार्य का महाप्रयाण दिवस है। वे हमारे धर्मसंघ के एक विशिष्ट आचार्य थे, ऐसा प्रतीत होता है। जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्मसंघ की अभी तीसरी शताब्दी चल रही है। प्रथम शताब्दी का प्रारंभ परम पूज्य आचार्य भिक्षु से हुआ। दूसरी शताब्दी का प्रारंभ श्रीमज्जयाचार्य के समय हुआ। तीसरी शताब्दी का प्रारंभ परम पूज्य गुरुदेव तुलसी के शासनकाल में हुआ। तेरापंथ को एक महाग्रन्थ मानें तो इसके प्रथम संस्करण का प्रकाशन आचार्य भिक्षु के समय, दूसरे संस्करण का प्रकाशन श्रीमज्जयाचार्य के समय और तीसरे संस्करण का प्रकाशन परम पूज्य गुरुदेव तुलसी के समय हुआ। मानों अभी तेरापंथ महाग्रन्थ का तीसरा संस्करण चल रहा है। इसके प्रकाशन में परम पूज्य आचार्य महाप्रज्ञजी का भी योगदान रहा।

ऐसा लगता है कि श्रीमज्जयाचार्य सामान्य आचार्य नहीं थे। वे अध्यात्मवेत्ता, तत्त्ववेत्ता और विधिवेत्ता आचार्य थे। उनके जीवन के अंतिम वर्षों को देखें तो ज्ञात हो सकता है कि वे अध्यात्म साधना में कितना समय नियोजित करते थे। उनके ग्रन्थों को देखकर उनके तत्त्वज्ञान को अनुमानित किया जा सकता है। भगवती जोड़, प्रश्नोत्तर तत्त्वबोध, झीणी चरचा, संदेह विषौषधि, जिनाज्ञामुखमण्डन, कुमति विहण्डन आदि ग्रन्थों को देखने से यह ज्ञात हो सकता है कि उनका ज्ञान कितना गहरा था। भगवती जोड़ जैसे ग्रन्थ की रचना करना कोई सामान्य बात नहीं है। वे श्रुतधर आचार्य थे।

संघीय व्यवस्थाओं के संदर्भ में देखें तो यह ज्ञात हो सकता है कि आज हमारे धर्मसंघ का जो सामुदायिक रूप है, उसमें श्रीमज्जयाचार्य का कितना योगदान है। किस प्रकार उन्होंने परिवर्तन किया, परिष्कार किया, व्यवस्थाओं में नयापन लाया। अध्यात्म, तत्त्व और विधि व्यवस्था--ये जयाचार्य के जीवन के तीन महत्त्वपूर्ण आयाम हैं।

आज के दिन जयपुर में उनका महाप्रयाण हुआ था। मैं उनका श्रद्धा के साथ स्मरण करता हूं, उन्हें वन्दन करता हूं।'

पर्युषण पर्वाधिराज : स्वाध्याय दिवस

28 अगस्त। पर्युषण पर्वाधिराज का दूसरा दिन। आज का मुख्य प्रवचन कार्यक्रम कन्वेशन हॉल के रूप में निर्मित 'महाश्रमण समवसरण' में आयोजित हुआ।

कार्यक्रम में साध्वी शान्तिलताजी ने भगवान ऋषभ के जीवन प्रसंगों को प्रस्तुति दी। साध्वी मैत्रीयशाजी और साध्वी ख्यातयशाजी ने स्वाध्याय दिवस के संदर्भ में गीत का संगान किया।

साध्वीवर्याजी ने 'क्षमा का पर्व मनाएं हम' गीत प्रस्तुत किया। मुख्य मुनिश्री ने दस धर्मों के अन्तर्गत क्षांति व मुक्ति के संदर्भ में अपने सारगर्भित विचार व्यक्त किए। महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाजी ने अपने उद्बोधन में 'स्वाध्याय' के महत्त्व को विवेचित किया।

परम पूज्य आचार्यप्रवर ने अपने मंगल प्रवचन में 'भगवान महावीर की अध्यात्म यात्रा' के वर्णन क्रम को आगे बढाते हुए 'नयसार' भव का वर्णन किया। आचार्यप्रवर ने स्वाध्याय दिवस के संदर्भ में भी समुपस्थित जनमेदिनी को प्रतिबोध प्रदान किया।

पर्युषण पर्वाधिराज : सामायिक दिवस

29 अगस्त। पर्युषण महापर्व का तीसरा दिन सामायिक दिवस के रूप में आयोजित हुआ। मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के दौरान साध्वी वैभवयशाजी ने सोहलवें तीर्थंकर भगवान शांतिनाथ के जीवनवृत्त के विषय में अपनी प्रस्तुति दी। साध्वी उदितप्रभाजी, साध्वी जयंतयशाजी, साध्वी निर्भयप्रभाजी, साध्वी चेलनाश्रीजी और साध्वी सुरभिप्रभाजी ने सामायिक दिवस के संदर्भ में गीत का संगान किया।

मुख्य मुनिश्री ने गुरुदेव तुलसी द्वारा रचित 'माया री मोटी है मार, खोटी रे खोटी प्रवंचना' गीत का संगान किया। साध्वीवर्याजी ने दस धर्मों के अन्तर्गत आर्जव और मार्दव धर्म के महत्त्व को विवेचित किया। महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाजी ने सामायिक दिवस के संदर्भ में अपना उद्बोधन प्रदान किया।

परम पूज्य आचार्यप्रवर ने अपने पावन प्रवचन में 'भगवान महावीर की अध्यात्म यात्रा' के वर्णन क्रम को आगे बढाते हुए 'मरीचि' भव का वर्णन किया। पूज्यप्रवर ने प्रसंगवश कहा--'चारित्रात्माओं व समणश्रेणी के संसारपक्षीय ज्ञातिजन यदा-कदा दर्शन करने आते हैं। चतुर्मास में तो कई लम्बी सेवा भी कर लेते हैं। बहिर्विहार में भी यह क्रम चलता है। चारित्रात्माएं व समणश्रेणी के सदस्य यह ध्यान रखें कि संसारपक्षीय ज्ञातिजनों को सेवा कराने का भी कोई परिणाम आ सके, वैसा प्रयास हो। जितने दिन वे रहें, कोई कक्षा या तत्सदृश उपक्रम रख लिया जाए तो संसारपक्षीय ज्ञातिजनों को ज्यादा लाभ मिल सकता है। संसारपक्षीय भतीजा, भाणजा आदि छोटे-छोटे बच्चे आएं और वे कई दिन रहने वाले हों तो उन्हें पच्चीस बोल आदि सिखाने का प्रयास करना चाहिए। इससे उन बच्चों के जीवन की भी एक उपलब्धि हो सकती है। संसारपक्षीय ज्ञातिजनों में से किसी में वैराग्यभाव जग सके, वैसा प्रयत्न भी करना चाहिए। यदि कोई संसारपक्षीय ज्ञातिजन दीक्षा के लिए तैयार हो जाए तो वह बहुत अच्छा कार्य हो सकता है।

बहिर्विहारी चारित्रात्माएं यह भी ध्यान दें कि दो-तीन साल में कोई वैरागी तैयार किया या नहीं। यदि कोई दीक्षा के लिए तैयार हो जाए तो उसके अभिभावक स्वीकृति दे दें और फिर कभी उसकी दीक्षा हो जाए तो मान सकते हैं कि उन चारित्रात्माओं का प्रयास सफल हो गया। एक वैरागी को तैयार कर उसकी दीक्षा करवा देना एक पुस्तक लिखने से कम कार्य नहीं है।

चारित्रात्माओं व समणश्रेणी के सदस्यों को यथासंभव अनुपात में एक वर्ष में एक आगम (अनुवाद, टिप्पण आदि के साथ) पढ़ने का प्रयास करना चाहिए। इस प्रकार सलक्ष्य ध्यान देकर बत्तीस वर्षों में भी बत्तीस आगम पढ लिए जाएं तो एक अच्छी उपलब्धि हो सकती है।'

पूज्यप्रवर ने अपने प्रवचन के पश्चात् एक प्रश्न उपस्थित किया--'इस बार भाद्रव कृष्ण पक्ष में दिन तो पन्द्रह ही हैं, किन्तु पक्खी चतुर्दशी को है, अमावस्या को नहीं--ऐसा क्यों?'

आचार्यप्रवर ने साधु-साध्वियों को इसका उत्तर देने हेतु आहूत किया। उनके द्वारा उत्तर प्राप्त न होने की स्थिति में आचार्यप्रवर ने स्वयं इसका समाधान प्रदान करते हुए कहा--'मेरी जानकारी के अनुसार चतुर्दशी को पक्खी होने के तीन कारण होते हैं--

१. कभी-कभी एक पक्ष में तिथि बढने के कारण सोलह दिन हो जाते हैं। एक पक्खी से दूसरी पक्खी के बीच में चौदह दिन भले हो जाएं, किन्तु सोलह दिन नहीं होने चाहिए। इस प्रकार पिछली पक्खी से अगली पक्खी के बीच का समय पन्द्रह दिन से पार न हो जाए, इसलिए सोलह दिनों के पक्ष में चतुर्दशी को पक्खी की जाती है।

२. आषाढ शुक्ल पक्ष में दिन पन्द्रह होने पर भी कभी-कभी चतुर्दशी को पक्खी आ सकती है। इसका कारण यह है कि चातुर्मासिक पक्खी के उनपचासवें दिन/पचासवें दिन संवत्सरी की जाती है। इस व्यवस्था को बिठाने के लिए अपेक्षानुसार आषाढ शुक्ल पक्ष में पन्द्रह दिन होने पर भी चतुर्दशी को पक्खी रखकर पूर्णिमा को भी चतुर्मास में समाहित कर लिया जाता है।

३. कभी-कभी भाद्रव कृष्ण पक्ष में दिन पन्द्रह होने पर भी चतुर्दशी को पक्खी की जाती है। इसका कारण यह है कि पर्युषण पक्खी के बाद पांचवे दिन संवत्सरी होनी चाहिए, यह हमारी परंपरा है। उस व्यवस्था को बिठाने के लिए अपेक्षानुसार भाद्रव कृष्ण पक्ष में दिन पन्द्रह होने पर भी चतुर्दशी को पक्खी करनी होती है। इस बार यही हुआ कि भाद्रव शुक्ला पंचमी को संवत्सरी है, किन्तु उससे पहले द्वितीया और तृतीया साथ में हैं। यदि अमावस्या को पक्खी होती तो पांचवें दिन संवत्सरी नहीं हो पाती। इसलिए चतुर्दशी को पक्खी रखी गई है, ताकि पक्खी के बाद अमावस्या, एकम, दूज-तीज (साथ में) और चौथ--इन चार दिनों के पश्चात् पांचम अर्थात् पांचवें दिन संवत्सरी हो जाए।

मेरे इस वक्तव्य में यदि कुछ भी संशोधनीय हो और मुझे कोई जानकार व्यक्ति जानकारी दे तो उस पर भी विचार किया जा सकता है।'

आचार्यप्रवर ने सामायिक दिवस के संदर्भ में भी पावन सम्बोध प्रदान किया। चतुर्दशी के प्रसंग में पूज्यप्रवर ने हाजरी का वाचन किया। पूज्यप्रवर के निर्देशानुसार मुनि उपशमकुमारजी, बालमुनि शुभम्कुमारजी और बालमुनि ऋषिकुमारजी ने लेखपत्र के कुछ भाग का उच्चारण किया। तदुपरांत नवदीक्षित इक्कीस साध्वियों ने आचार्यप्रवर के निर्देशानुसार लेखपत्र का अवशिष्ट भाग उच्चरित किया। आचार्यप्रवर ने प्रथम बार 'हाजरी' के दौरान इस रूप में लेखपत्र के उच्चरित करने वाले साधु-साध्वियों को पांच-पांच कल्याणक तथा पहले भी लेखपत्र उच्चरित कर पूज्यप्रवर से कल्याणक की बक्सीस प्राप्त बालमुनिद्वय को एक-एक कल्याणक बक्सीस किए। तत्पश्चात् साधु-साध्वियों ने अपने स्थान पर खड़े होकर लेखपत्र का उच्चारण किया।

पर्युषण पर्वाधिराज : वाणी संयम दिवस

30 अगस्त। पर्युषण पर्वाधिराज का चौथा दिन। वाणी संयम दिवस का आयोजन। मुख्य प्रवचन कार्यक्रम में साध्वी काव्यलताजी ने उन्नीसवें तीर्थंकर भगवान मल्लिनाथ के व्यक्तित्व एवं कर्तृत्व को प्रस्तुति दी। साध्वी प्रियंवदाजी, साध्वी प्रेरणाश्रीजी और साध्वी मृदुयशाजी ने वाणी संयम दिवस के संदर्भ में गीत का संगान किया।

साध्वीवर्याजी ने परम पूज्य आचार्यश्री महाश्रमणजी द्वारा रचित 'सत्य के खातिर समर्पित प्राण हैं' गीत का संगान किया। मुख्य मुनिश्री ने दस धर्मों के अन्तर्गत लाघव और सत्य धर्म को विवेचित किया। महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाजी का वाणी संयम दिवस के संदर्भ में उद्बोधन हुआ।

परमाराध्य आचार्यप्रवर ने अपने पावन प्रवचन में भगवान महावीर की अध्यात्म यात्रा के प्रसंग को आगे बढाते हुए त्रिपृष्ठ भव का वर्णन प्रारंभ किया। आचार्यप्रवर ने इस दौरान प्रसंगवश कहा--आदमी में कई बार घमण्ड का भाव आ सकता है, किन्तु वह त्याज्य है। गृहस्थ को धन का अहंकार नहीं करना चाहिए। उसके प्रति ज्यादा मोह/आसक्ति भी नहीं करनी चाहिए। उसक दुरुपयोग भी नहीं करना चाहिए। पुण्य के योग से अनुकूल संवेदना के निमित्त स्वरूप धन प्राप्त हो सकता है, किन्तु पुण्योदय का क्रम संपन्न होकर पापोदय भी हो सकता है। आदमी को धन के धमंड से बचने का प्रयास करना चाहिए।

बीमार व्यक्ति सेवा सापेक्ष बन सकता है। सेवा न हो तो सेवा सापेक्ष को कठिनाई हो सकती है। साधु-साध्वियों के सामने सेवा के प्रसंग भी आते हैं। हमारे धर्मसंघ में साधु-साध्वियों के लिए सामान्य व्यवस्था है कि हर अग्रणी और हर सहवर्ती अपने जीवन में तीन वर्ष अक्षम चारित्रात्माओं की अनिवार्य रूप से सेवा करे। जिन चारित्रात्माओं ने अब तक तीन वर्ष की सेवा नहीं की है तो उन्हें अपने मन में यह भावना रखनी चाहिए कि उनके सिर पर संघ का जो सेवा के संदर्भ में कर्जा है, जब भी अवसर आए, इस तीन वर्ष के कर्ज से मुक्त होना है। अपनी ओर से भावना रखनी चाहिए और वैसा प्रयास भी करना चाहिए कि तीन वर्ष का वैधानिक कर्जा यथौचित्य यथाशीघ्र उतर जाए। तीन वर्ष तो सामान्य व्यवस्था है। इसके सिवाय भी जब कभी सेवा का प्रसंग उपस्थित हो जाए, साधु-साध्वियों को उसके लिए तैयार रहना चाहिए। सेवा से मेवा मिलता है। सेवा भी अन्तर मन से करनी चाहिए, सेवा सापेक्षों को चित्तसमाधि पहुंचाने का प्रयास करना चाहिए।

कोई यह संकल्पात्मक विचारणा कर ले कि मेरी साधना-तपस्या का फल हो तो मैं अगले जन्म में चक्रवर्ती बन जाऊं, राजा बन जाऊं, प्रबल बलशाली बन जाऊं-- इस प्रकार संकल्प रूप में भौतिक कामना करना निदान होता है। निदान करना अच्छा नहीं होता। निदान मुख्यतया अगले जन्म से संबंधित होता है। निदान करना कीमती हीरे को कोड़ी में बेच देने के समान होता है। साधक को निदान नहीं करना चाहिए।'

आचार्यप्रवर ने वाणी संयम दिवस के संदर्भ में भी उपस्थित विशाल जनसमूह को पावन पाथेय प्रदान किया।

पर्युषण पर्वाधिराज : अणुव्रत चेतना दिवस

31 अगस्त। पर्युषण पर्वाधिराज का पांचवा दिन अणुव्रत चेतना दिवस के रूप में आयोजित हुआ। साध्वी विशालयशाजी ने बाईसवें तीर्थंकर भगवान अरिष्टनेमि के जीवनवृत्त को प्रस्तुत किया। साध्वी धैर्यप्रभाजी और साध्वी तेजस्वीप्रभाजी ने अणुव्रत चेतना दिवस के संदर्भ में गीत का संगान किया।

मुख्य मुनिश्री ने परम पूज्य आचार्यप्रवर द्वारा रचित 'भारत के लोगो! जागो तुम जीवन में संयम अपनाओ' गीत का संगान किया। साध्वीवर्याजी ने दस धर्मों के अन्तर्गत 'संयम' को विवेचित किया। महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाजी का अणुव्रत चेतना दिवस के विषय में उद्‌बोधन हुआ।

परमाराध्य आचार्यप्रवर ने अपने पावन प्रवचन में भगवान महावीर की अध्यात्म यात्रा के अन्तर्गत त्रिपृष्ठ भव के वर्णन क्रम को आगे बढाया। पूज्यप्रवर ने प्रसंगवश कहा--'युद्ध तो न हो, यही अच्छा है। विश्व में यदा-कदा विभिन्न देशों में कुछ कलह की-सी स्थिति सामने आती रहती है। पड़ोसी देश परस्पर भाईचारे से रहें। छोटी-छोटी बातों को लेकर सीमा पर हिंसा की बातें क्यों हों। सभी राष्ट्र परस्पर मैत्री भाव से रहे, जितना हो सके अहिंसा रखें। शस्त्र भले पास में हैं, किन्तु उन्हें काम न लेना पड़े, ऐसी अहिंसा विश्व में रहे। कोई समस्या हो तो साथ में बैठकर उसका समाधान खोजा जा सकता है। 'विश्वैक नीडम्'--पूरा विश्व एक परिवार की तरह रहे। अपने-अपने राष्ट्रों के मुखिया लोग अपने साथियों से बात कर ऐसी स्थिति का निर्माण करने का यथासंभव प्रयास करें कि राष्ट्रों में परस्पर विद्वेष न रहे।'

संसार में मनोरंजन चलता है, किन्तु सामान्यतया वैसा मनोरंजन नहीं होना चाहिए, जिससे निष्ठुरता हो, प्राणियों की हिंसा, हत्या हो। उदाहरणार्थ--प्राणियों को आपस में लड़ाना और वे लड़कर मर जाएं तो उसमें मजे लेना। इस प्रकार किसी कमरे में दो-तीन कबूतरों को बन्द कर उन्हें इधर से उधर उड़ाना और उसमें खुशी मनाना।

अणुव्रत दिवस के संदर्भ में आचार्यप्रवर ने 'अणुव्रत है सोया संसार जगाने के लिए'' गीत का आंशिक संगान कर प्रेरणा प्रदान करते हुए प्रसंगवश कहा--'मैंने श्रावक-श्राविकाओं के लिए एक आगे की भूमिका का प्रोग्राम बताया था--सुमंगल साधना। अणुव्रत, बारहव्रत, कुछ प्राथमिक कक्षा के प्रोग्राम हैं। गार्हस्थ्य में रहते हुए भी सुमंगल साधना के माध्यम से बहुत ऊंची साधना की जा सकती है। उसे हर कोई नहीं कर सकता। उसकी अपनी व्यवस्थाएं हैं। वह साधना श्रावक को काफी ऊंचाई पर ले जाने वाली होती है। अनेक-अनेक श्रावक-श्राविकाओं ने सुमंगल साधना स्वीकार की है। इस विषय में श्रावक मुख्य मुनि तथा बाइयां साध्वीवर्या से जानकारी प्राप्त कर सकती हैं।

पर्युषण पर्वाधिराज : जप दिवस

01 सितम्बर। पर्युषण पर्वाधिराज का छठा दिन। जप दिवस का आयोजन। पर्युषण के दौरान मुख्य प्रवचन कार्यक्रम में जनता की विराट उपस्थिति रहती है, किन्तु आज तो रविवार का अवकाश होने के कारण मानों जनता का पारावर ही उमड़ आया। जहां नजर जा रही थी, वहां जनता ही जनता नजर आ रही थी। कार्यक्रम में साध्वी मंजुरेखाजी ने तेईसवें तीर्थंकर भगवान पार्श्व के जीवन प्रसंगों को प्रस्तुति दी। साध्वी मधुस्मिताजी आदि साध्वियों ने जप दिवस के संदर्भ में गीत प्रस्तुत किया।

साध्वीवर्याजी ने परमपूज्य गुरुदेव तुलसी द्वारा रचित 'तप-संयम सरवर में न्हालै' गीत का संगान किया। मुख्य मुनिश्री ने दस धर्मों के अन्तर्गत तप को विवेचित किया। महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाजी का जप दिवस के संदर्भ में उद्बोधन हुआ।

परमपूज्य आचार्यप्रवर ने अपने पावन प्रवचन में 'भगवान महावीर की अध्यात्म यात्रा' के वर्णन क्रम को आगे बढाते हुए अंतिम भव का वर्णन प्रारंभ कर विभिन्न प्रेरणाएं प्रदान कीं। पूज्यप्रवर ने जप दिवस के संदर्भ में उपस्थित विशाल जनमेदिनी के लिए पावन उद्बोधन प्रदान किया तथा नमस्कार महामंत्र का सामूहिक रूप में जप भी करवाया।

पूज्यप्रवर के प्रवचन के पश्चात् श्रद्धालुओं ने बड़ी संख्या मे अठाई व उससे अधिक दिनों की तपस्या का प्रत्याख्यान किया।

पर्युषण पर्वाधिराज : ध्यान दिवस

2 सितम्बर। पर्युषण पर्वाधिराज के सातवें दिन का ध्यान दिवस के रूप में आयोजन। मुख्य प्रवचन कार्यक्रम में साध्वी ऋद्धियशाजी ने 'तीर्थ और तीर्थंकर' विषय पर अपनी प्रस्तुति दी। साध्वी जिनरेखाजी आदि साध्वियों ने 'ध्यान दिवस' के संदर्भ में गीत का संगान किया।

मुख्य मुनिश्री ने 'काम में मत मुरझो प्राणी' गीत का संगान किया। साध्वीवर्याजी ने दस धर्मों में अंतिम 'ब्रह्मचर्य' के महत्त्व को विवेचित किया। महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाजी का ध्यान दिवस के संदर्भ में उद्बोधन हुआ।

परमाराध्य आचार्यप्रवर ने भगवान महावीर की अध्यात्म यात्रा के वर्णनक्रम को आगे बढाते हुए भगवान महावीर के अंतिम भव के अन्तर्गत गर्भ और बाल्यकाल की घटनाओं का वर्णन किया। पूज्यप्रवर ने ध्यान दिवस के संदर्भ में भी पावन प्रेरणा प्रदान की। आचार्यप्रवर ने 'णमो सिद्धाणं' के ध्यान का प्रायोगिक प्रशिक्षण

भी दिया।

कार्यक्रम में पूज्यप्रवर से श्री अर्पित मोदी ने ४२ दिन तथा श्रीमती पूजा पोकरणा ने ३१ दिन की तपस्या का प्रत्याख्यान किया। इसके साथ बड़ी संख्या में श्रद्धालुओं ने अठाई एवं उससे अधिक दिनों की तपस्या का प्रत्याख्यान किया।

आज राजस्थान पुलिस के डी.आइ.जी. श्री प्रसन्नकुमार खमेसरा ने पूज्यप्रवर के दर्शन कर पावन आशीर्वाद प्राप्त किया।

स्मृति संबल

- लाडनूं निवासी हैदराबाद प्रवासी श्री चंपालाल सुराणा (सुपुत्र स्व. श्री पृथ्वीराज सुराणा) का निधन हो गया। वे जैन सिद्धान्तों पर दृढ एवं उच्च मनोबली श्रावक थे। प्रतिदिन सामायिक रखने वाले बारहव्रती श्रावक थे। प्रतिवर्ष चतुर्मास काल में सेवा उपासना का क्रम रहता था। बीमारी की अवस्था में भी सेवा के लिए सदैव तत्पर रहते थे। लाडनूं का सुराणा परिवार संघ एवं संघपति के प्रति समर्पित परिवार है।
- चूरू निवासी दिल्ली प्रवासी श्रीमती मधुलिका सुराणा (धर्मपत्नी श्री नरेन्द्र सुराणा) का तिविहार संथारे में देहावसान हो गया। वे शान्त, सरल स्वभावी, उदारता एवं करुणा आदि गुणों से युक्त श्राविका थी। प्रतिवर्ष सपरिवार गुरुदर्शन का क्रम अनेक वर्षों तक नियमित चलता था। परिवार से संबद्ध साध्वी संघमित्राजी संघ में साधनारत है। दिल्ली का सुराणा परिवार श्रद्धाशील परिवार है।
- सरदारशहर निवासी जयपुर प्रवासी श्री लालचन्द बैद (सुपुत्र स्व. श्री जयचन्दलाल बैद) का निधन हो गया। वे समाजभूषण स्व. चन्दनमल बैद के अनुज थे। उनमें देव, गुरु, धर्म के प्रति अटूट आस्था थी। प्रतिमास दस सामायिक का नियम आजीवन निभाया। जयपुर में प्रवासित चारित्रात्माओं के दर्शन सेवा का लाभ उठाते थे। चार्टेड अकाउन्टेंट एवं आर्थिक दृष्टि से सम्पन्न होते हुए भी बाह्य आडंबरों और भौतिक चकाचौंध के विपरित ''सादा जीवन उच्च विचार'' उक्ति को चरितार्थ करते थे। लायन्स क्लब आदि अनेक संस्थाओं के माध्यम से अनेक सामाजिक कत्तव्यों में भी जागरुक रहते थे। पूरे बैद परिवार में धर्म के संस्कार हैं।
- उमरा निवासी केसिंगा प्रवासी श्री शंकरलाल जैन (सुपुत्र स्व. श्री फकीरचन्दजी जैन) का निधन का गया। वे प्रतिदिन एक सामायिक करने वाले श्रावक थे। प्रतिवर्ष गुरुदर्शन का क्रम रखते थे। तेरापंथ सभा के अध्यक्ष के रूप में उनकी सेवाएं संघ को प्राप्त हुई। परिवार से साध्वी किरणयशाजी, साध्वी आदित्यप्रभाजी, साध्वी कमनीयप्रभाजी एवं मुनि केशीकुमारजी आदि चारित्रात्माएं संघ में साधनारत हैं। पूरे परिवार में संघ संघपति के प्रति गहरे श्रद्धाभाव है।
- देशनोक निवासी हैदराबाद प्रवासी श्रीमती संतोषदेवी आंचलिया (धर्मपत्नी श्री कमलचन्द आंचलिया) का देहावसान हो गया। वे धार्मिक प्रवृत्ति वाली एवं प्रतिदिन दो सामायिक करने वाली बारहव्रती श्राविका थी। रास्ते की सेवा में विशेष रुचि रखती थी। पूरा आंचलिया परिवार श्रद्धाशील परिवार है।

विज्ञप्ति के संदर्भ में पत्र व्यवहार का पता एवं संपर्क सूत्र

जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा, 3 पोर्चुगीज चर्च स्ट्रीट, कोलकाता 700001

मो.नं. - 7044778888 Email : vigyapti@terapanthinfo.com

जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक- संजय खटेड़ द्वारा पवन प्रिंटर्स, जे-9 नवीन शाहदरा, दिल्ली से मुद्रित तथा अणुव्रत भवन, 210 दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली- 110002 से प्रकाशित। सम्पादक : छगनसिंह सांखला